'कोरोना महामारी का दौर, अस्मिता के सवाल और समकालीन हिंदी कविता' विषय पर राष्ट्रीय वेबिनार संपन्न

“यथार्थ के प्रति ईमानदारी ही कविता का शिल्प”- प्रो० भारती

कोलकाता विश्वविद्यालय के अधीनस्थ सिटी कॉलेज के हिंदी विभाग और आंतरिक गुणवत्ता आश्वासन सेल के संयुक्त तत्वावधान में एक दिवसीय राष्ट्रीय वेबिनार का आयोजन 25 जुलाई, 2020 को 'कोरोना महामारी का दौर, अस्मिता के सवाल और समकालीन हिंदी कविता' विषय पर किया गया। इस राष्ट्रीय वेबिनार का आरम्भ कॉलेज के प्रचार्य प्रो o शीतलप्रसाद चट्टोपाध्याय के संदेश भाषण से हुआ। उन्होंने अपने संदेश में सिटी कॉलेज के इतिहास से अवगत कराते हुए इससे कोरोना महामारी के दौर में ऐसे कार्यक्रमों को रचनात्मकता बनाए रखने के लिए आवश्यक बतलाया। सिटी कॉलेज के हिंदी विभाग के विभागाध्यक्ष और युवा कवि श्री संदीप प्रसाद के संचालन में होने वाले इस राष्ट्रीय वेबिनार में विभिन्न विश्वविद्यालयों के प्राध्यापकों ने वक्तव्य रखा। कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए प्रो० विजय कुमार भारती (काज़ी नजरुल विश्वविद्यालय) ने कहा कि कोरोना का समय संवेदना का समय हैं। उन्होंने समकालीनता शब्द पर जोर देते हुए कहा कि कविता का स्वर समकालीन होता हैं और समकालीनता निरतंरता के नजदीक हैं। मुख्य वक्ता डॉ o कौशल पवार (दिल्ली विश्वविद्यालय) ने वर्तमान समय की स्थितियों का हवाला देते हुए भारतीय समाज में प्रचलित छुआछूत के मनोवैज्ञानिक असर की तुलना की। असम विश्वविद्यालय के डॉ o शीतांशु कुमार ने अपने सोदाहरण वक्तव्य में कहा कि कोरोना दौर की विकट परिस्थितियों में अधिकतर साहित्यकारों की सामाजिक प्रतिबद्धता बढ़ी है। आम आदमी की पीड़ा , व्यवस्था की समस्याओं और मध्यवर्ग के स्वार्थ को कवियों ने अपनी कविताओं में उकेरा है। कोलकाता के महाराजा श्रीशचंद्र कॉलेज के सहायक प्रोफेसर डॉ o कार्तिक चौधरी ने विभिन्न आंकड़ों के द्वारा समकालीन परिस्थितियों की चर्चा की और कहा कि मानव मन की जिजीविषा को नयी समकालीन कविता साथ लेकर चलती है। मजदूरों का दर्द कवियों का भी दर्द है। इस दौर की कविताएं विभिन्न अस्मिताओं की तलाश करने की इमानदारी दिखाती हैं। वर्धा के महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय के डॉ o अभिलाष गोंड ने समकालीन कविता को उत्तर आपातकाल और उत्तर नक्सलबाड़ी काल की जनतांत्रिक मूल्यों कविता कहा। उन्होंने अपने वक्तव्य में वर्तमान परिस्थितियों से परिचित कराते हुए मजदूर , प्राइवेट अस्पतालों की भी विस्तार से मूल्यांकन किया। बर्दवान विश्वविद्यालय के डॉ० शशि कुमार शर्मा ने अपने वक्तव्य में कोरोना काल में फैल रहे कई प्रकार के धार्मिक-सांप्रदायिक अंधविश्वासों को उजागर किया। उन्होंने अंधभक्ति के बजाय वैज्ञानिकता पर बल देने की बात की। कूचबिहार पंचानन बर्मा विश्वविद्यालय की सहायक प्रवक्ता सुश्री रीता चौधरी ने अपने वक्तव्य में शोषक और शोषित वर्ग के लेखन की तुलना की। उन्होंने अपने वक्तव्य को समकालीन दौर में स्त्री की अवस्था पर केंद्रित रखा। कार्यक्रम के अंत में विख्यात अंग्रेजी कवयित्री डॉक्टर शर्मिला राय ने धन्यवाद ज्ञापन किया। पूरे कार्यक्रम के दौरान

नेपथ्य से डॉ० तपन कुमार घोष , डॉ सुप्रिति सरकार , श्री अतनु सरकार और श्री निहार सरकार का सहयोग बना रहा।

अधिकारी ने बताया कि पीपीई उपयोग को तर्कसंगत बनाया गया है और पिछले सप्ताह से कोरोना टेस्ट की लागत में भी भारी गिरावट आई है. दरअसल, पहले के बारे में भी हर दिन अपडेट जानकारी उपलब्ध कराई जा रही है. राज्य सरकार ने सभी निजी व सरकारी अस्पतालों को इस का निर्देश दिया था.

तेजी लाने के लिए कहा है क्योंकि खरीफ मौसम पहले ही शुरू हो चुका है.

कोरोना महामारी का दौर, अस्मिता के सवाल और समकालीन हिंदी कविता विषय पर राष्ट्रीय वेबिनार संपन्न

यथार्थ के प्रति ईमानदारी ही कविता का शिल्प : प्रो भारती

कोलकाताः विश्वविद्यालय के अधीनस्थ सिटी कॉलेज के हिंदी विभाग और आंतरिक गुणवत्ता आश्वासन सेल के संयुक्त तत्वावधान में एक दिवसीय राष्ट्रीय वेबिनार का आयोजन 25 जुलाई, 2020 को 'कोरोना महामारी का दौर ,अस्मिता के सवाल और समकालीन हिंदी कविता' विषय पर किया गया. इस राष्ट्रीय वेबिनार का आरम्भ कॉलेज के प्रचार्य प्रो शीतलप्रसाद चट्टोपाध्याय के संदेश भाषण से हुआ. उन्होंने अपने संदेश में सिटी कॉलेज के इतिहास से अवगत कराते हुए इससे कोरोना महामारी के दौर में ऐसे कार्यक्रमों को रचनात्मकता बनाए रखने के लिए आवश्यक बतलाया. सिटी कॉलेज के हिंदी विभाग के विभागाध्यक्ष और युवा कवि श्री संदीप प्रसाद के संचालन में होने वाले इस राष्ट्रीय वेबिनार में विभिन्न विश्वविद्यालयों के प्राध्यापकों ने वक्तव्य रखा. कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए प्रो विजय कुमार भारती (काज़ी नजरुल विश्वविद्यालय) ने कहा कि कोरोना

का समय संवेदना का समय है. उन्होंने समकालीनता शब्द पर जोर देते हुए कहा कि कविता का स्वर समकालीन होता हैं और समकालीनता निरंतरता के नजदीक हैं. मुख्य वक्ता डॉ कौशल पवार (दिल्ली विश्वविद्यालय) ने वर्तमान समय की स्थितियों का हवाला देते हुए भारतीय समाज में प्रचलित छुआछूत के मनोवैज्ञानिक असर की तुलना की. असम विश्वविद्यालय के डॉ शीतांशु कुमार ने अपने सोदाहरण वक्तव्य में कहा कि कोरोना दौर की विकट परिस्थितियों में अधिकतर साहित्यकारों की सामाजिक प्रतिबद्धता बढ़ी है. आम आदमी की पीड़ा, व्यवस्था की समस्याओं और मध्यवर्ग के स्वार्थ को कवियों ने अपनी कविताओं में उकेरा है. कोलकाता के महाराजा श्रीशचंद्र कॉलेज के सहायक प्रोफेसर डॉ कार्तिक चौधरी ने विभिन्न आंकड़ों के द्वारा समकालीन परिस्थितियों की चर्चा की और कहा कि मानव मन की जिजीविषा को नयी समकालीन कविता साथ लेकर चलती है. मजदूरों का दर्द कवियों का भी दर्द है. इस दौर की कविताएं विभिन्न अस्मिताओं की तलाश करने की इमानदारी दिखाती हैं. वर्धा के महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय के डॉ अभिलाष गोंड ने समकालीन कविता को उत्तर आपातकाल और उत्तर नक्सलबाड़ी काल की जनतांत्रिक मूल्यों कविता कहा. उन्होंने अपने वक्तव्य में वर्तमान परिस्थितियों से परिचित कराते हुए मजदूर, प्राइवेट अस्पतालों की भी विस्तार से मूल्यांकन किया. बर्दवान विश्वविद्यालय के डॉ0 शशि कुमार शर्मा ने अपने वक्तव्य में कोरोना काल में फैल रहे कई प्रकार के धार्मिक-सांप्रदायिक अंधविश्वासों को उजागर किया. उन्होंने अंधभक्ति के बजाय वैज्ञानिकता पर बल देने की बात की. कूचबिहार पंचानन बर्मा विश्वविद्यालय की सहायक प्रवक्ता सुश्री रीता चौधरी ने अपने वक्तव्य में शोषक और शोषित वर्ग के लेखन की तुलना की. उन्होंने अपने वक्तव्य को समकालीन दौर में स्त्री की अवस्था पर केंद्रित रखा. कार्यक्रम के अंत में विख्यात अंग्रेजी कवयित्री डॉक्टर शर्मिला राय ने धन्यवाद ज्ञापन किया. पूरे कार्यक्रम के दौरान नेपथ्य से डॉ0 तपन कुमार घोष, डॉ सुप्रिति सरकार, श्री अतनु सरकार और श्री निहार सरकार का सहयोग बना रहा.